ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 4 | Feb-Mar 2025
Available online at: https://nijms.com/

वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण

डॉ0 आर0सी0 भट्ट

असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डॉ0 शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग, (चमोली)

corresponding author Emai: rameshchandrabhatt1976@gmail.com

शोध सारांश

वैदिक परम्परा में पर्यावरण संरक्षण एक व्यापक विषय है, जिसमें वेदों उपनिषदों और अन्य प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण के विचार शामिल हैं। पारंपारिक ज्ञान पर्यावरणीय चेतना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समुदाय के सामाजिक और भौतिक वातावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।। वैदिक साहित्य में प्रकृति को देवी-देवताओं के रुप में देखा जाता है और उसे सम्मान और सुरक्षा प्रदान की जाती है। पृथ्वी और उसके संशाधनों को पवित्र प्राणियों के रुप में माना जाता है, और उसका दोहन या नुकसान को पाप माना जाता है। हिन्दू धर्मो में वेदों उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रन्थों में पेड पौधों और वन्य जीवन को बहुत महत्व प्रदान किया गया है, और मनुष्य जीवन के लिए भी उनका मूल्य बताये गये हैं। प्राचीन वेदों में पर्यावरण संरक्षण पारिस्थितिक संतुलन मौसम चक्र, वर्षा घटना, जल विज्ञान चक्र और संबन्धित विषयों के कई सन्दर्भ देखने को मिलते है। प्राचीन काल में ऋषि मुनियों ने हमारे चार वेदों में पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण स्थान दिया है, जिस कारण आज तक हमारे पर्यावरण में स्थिरता है। वैदिक परम्परा में पर्यावरण संरक्षण प्रकति के प्रति सम्मान, संतुलन और सह-अस्तित्व के विचारों पर आधारित है। यह शिक्षा चेतना, और आवश्यक गुणों के महत्व को भी दर्शाता है। वैदिक ग्रन्थों में, मानव को प्रकृति के साथ समांजस्य स्थापित करने और उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित किया गया है।

बीज शब्द: *वैदिक परम्परा, पर्यावरण संरक्षण, वैदिक ग्रन्थ, पारंपारिक ज्ञान।*

परिचय-

हिन्दू धर्म के सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद ओर उपनिषद् हैं, इनमें जगह-जगह प्रकति से विरासत में मिली सभी वस्तुओं का जीवन से गहरा जुडाव मिलता है, और इन सभी को अत्यन्त पवित्र मानकर लोग इनकी पूजा-अर्चना करते हैं। वैदिक युग की शिक्षा के पाठ्यक्रम की पाठ्य पुस्तकें रही है। विद्याार्थी वेद मंत्रों तथा सूक्तियों को कंठस्थ करते और जीवन का अंग बनाते थे। वैदिक काल में पर्यावरण शिक्षा, प्रदूषण के कारणों और निवारण के विषय में चिन्तन किया जाता है। वैदिक युग में पर्यारण शिक्षा को सर्वोपरि माना। उनकी सीख आज और अधिक प्रांसगिक व हितसाधक हैं।

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण वैश्विक स्तर पर ज्वलंत मुद्दा बन गया है। पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना संपूर्ण विश्व के लिए एक संयुक्त मुद्दा है। पर्यावरण का अर्थ है परि+आवरण अर्थात हम जिससे चारों ओर से घिरे हैं। जिसमें जल मंडल, थल मंडल और वायु मंडल सम्मिलित है, अगर इनमें से कोई एक घटक भी असंतुलित होता है, तो पर्यावरण में भी असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। पर्यावरण असंतुलन के कारण पृथ्वी धरातल पर भी असंतुलन उत्पन्न होने लगता है। यदि हम प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की बात करे तो वैदिक काल से ही पर्यावरण संरक्षण की बात होती रही है। वेदों में कहा गया है कि मनुष्य का शरीर पृथ्वी, जल, अंतरिक्ष, अग्नि और वायु जैसे पाच तत्वों से निर्मित है। यदि इनमें से एक भी तत्व दूषित होता है तो इसका प्रभाव मानव जीवन पर अवश्य पडता है। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही हमारे पूवजों ने प्रकति को देवी-देवताओं का स्थान दिया है, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु व नदियों को देवी-देवताओं के रुप में पूजा जाता था। पेड-पौधों और वनस्पतियों को औषधि के रुप में प्रयुक्त किया जाता था। पेडों जैसे पीपल, वटवृक्ष, केला, आम आज भी शादी-विवाह धार्मिक अवसरों पर पूजे जाते हैं। पेड़ को लगाना पुत्र प्राप्ति के समान माना गया है।

उद्देश्य -

वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी अध्ययन।

वैदिक काल में पर्यावरण प्रदूषण और उसका निवारण।

वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण।

औचित्य -

वैदिक काल में शिक्षा में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना के अध्ययन के आधार आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना आम जनमानस में लाया जा सके। अतः इस शोध में पर्यावरण संरक्षण एंव चेतना का अध्ययन किया गया है। वैदिक समय में मानव जीवन के कल्याणार्थ पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने की बात कही है। वेद में विविध सूक्तों (पृथ्वी सूक्त, अग्नि सूक्त, वरुण सूक्त, आपः सूक्त) के माध्यम से शुद्ध हवा, शुद्ध भोजन, पवित्र भूमि एवं शुद्ध वातावरण में जीवन जीने की बात कही है। वैदिक पर्यावरण का अर्थ वेद में पर्यावरण सम्बन्धित बातों से है। वैदिक पर्यावरण के अर्थ को हम निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं। निरोगी काया एवं दीर्घ आयु (दीघायु हेतु नित्य प्रणायाम) योग शुद्ध हवा का सेवन करना, सात्विक भोजन ग्रहण करना, सात्विक विचार को अपने भीतर लाना, वृक्षारोपण समय-समय पर करते रहना, जड़ी बूटियों एवं गौ-घृत से आहुति देना।

वेदों में पर्यावरण संरक्षण हमारे वैदिक वाड्न्मय मे हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया है। पर्यावरण के प्रति प्रत्येक मानव को सचेत किया गया है। पर्यावरण के मूल घटक पंच तत्वों में देवत्य का भी दर्शन कराया गया है। पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) को प्रदूषण रहित बनाने के लिए अनेक विद्वानों इनकी उपासना करके इनके संरक्षण के लिए मानव को प्रेरित किया है। वैदिक साहित्य में वृक्ष वनस्पति संरक्षण हेतु पाप-पुण्य और स्वर्ग-नरक की अवधारणा से जोडकर तत्कालीन जन-मानस को महत्वपूर्ण पर्यावरणीय घटक पेड-पौधों की रक्षा के लिए प्रेरित किया है। तत्कालीन ऋषि- मुनि इस बात को जानते थे कि यदि वृक्ष वनस्पति पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा को सुधारने की धारणा से जोड दिया जाये तो व्यक्ति आसानी से वृक्ष वनस्पति के सरक्षण हेतु जागृत होगा। इसीलिए अग्निपुराण में कहा गया है कि जो आराम (बर्गाचा) बनवाता है वह मनुष्य अधिक समय तक इन्द्र के नन्दन वन में निवास करने का अधिकारी होता है।

समस्याः-

वैदिक काल में पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति चेतना पर एक अध्ययन किया गया। वेदों में पेड-पौधे जीव-जन्तु, पशु-पक्षी एवं पर्यावरण को नुकसान पहुचाना निषेध है। इन सबकी सुरक्षा के लिए सकारात्मक निर्देश भी दिये गये है। अथर्ववेद में कहा गया है कि द्विपाद (दो पैर वाले) और चतुष्पाद (चार पैर वाले) जीवों की हत्या न करो। इसी वेद में गाय, घोडें एवं मनुष्य एवं पेड-पौधों की सुरक्षा के लिए कहा गया है।

यजुर्वेद में जीव-जन्तु की हत्या दण्डनीय अपराध माना गया है। यजुर्वेद में पेड-पौधों को पवित्र माना गया है, एवं इन्हें धार्मिक अनुष्ठान शादी-विवाह एवं पैतृक कार्य में पवित्र स्थान दिया गया है। वैदिक व्यवस्थाकार पशु-पक्षी और वन्य प्रणियों के संरक्षण की बात पर्यावरण संवर्धन की जागरुकता पैदा करने के लिए करता है। साथ-साथ इनकी मानव जीवन के लिए उपयोगिता के परिप्रेक्ष्य में उल्लेख करता है, पेड-पौधे, वृक्ष-वनस्पति गाय के दूध औषधि आदि की प्रशंसा करने वाले सैकडों सूक्त वेदों में मिलते है।

ऋग्वेद के प्रणेता ऋषि-मानव और जीव-जन्तुओं के साथ ही वनस्पति, पेड-पौधों में भी उसी एक के विविध रुपों को देखते हैं। विश्वामित्र ने ऋग्वेद के सप्तम मंडल में देवताओं के साथ औषधियाँ और वृक्षों के लिए भी स्रोत कहे है कि इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि, जल, औषधियां और वृक्ष हमारे इस स्रोत को सुने मरुतों के पास रहकर हम सुख से रहेंगे तुम सदा हमारी रक्षा करो।

अनुसंधान विधिः-

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णानात्मक है, जिसमें वेद और पुराणों में उल्लेखित मंत्रों और सूक्तियों का उपयोग पर्यावरण संरक्षण और चेतना के अध्ययन के लिए किया गया है।

शोध के सोपानः-

पर्यावरण संरक्षणः-

प्रकति ने जीव-जन्तुओं, वनस्पति, नदी, पहाड, वायु, जल, खनिज, सम्पदा आदि की रचना की है। इन प्राकृतिक संशाधनों को सुरक्षित रखते हुए उपयोग में लाना तथा प्रदूषण से मुक्त रखना ही पर्यावरण संरक्षण है। वनस्पति एवं जीव-जगत के साथ साहचर्य रखे, यही वैदिक साहित्य की विशेषता है। वैदिक कर्मकाण्डों की अनेक विधाओं ने भी पर्यावरण संरक्षण और सुरक्षा का दायित्य निभाया है। अरण्यों में रहकर पर्यावरण के प्रति विशेष जागरुक रहने वाले ऋषियों ने अरण्य साहित्य का सृजन कर विश्व में पर्यावरण के महत्व को रेखांकित किया है। अरण्य ब्राहा्रण ग्रंथों एवं उपनिषदों के बीच की कडी है।

उपनिषदों में जल, वायु, पृथ्वी और अंतरिक्ष का विषद वर्णन हुआ है। इसमें प्रकति की महता को पर्याप्त मान्यता प्रदान की गई है। इनके अनुसार पदार्थ की उत्पत्ति एवं जीव-जगत की सृष्टि, अग्नि, जल और पृथ्वी के विनियोग से हुई है। रामायणकाल में भी पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण के प्रति चेतना पर्याप्त सक्रिय थी, वाल्मीकि रामायण में राम के वन गमन के समय प्रकति के मनोरम दृश्य का उल्लेख किया गया है। इस समय पर्वत, प्रदेश, घने-जंगल एवं सुरम्य नदियों के किनारे सारस और चक्रवाक पक्षी आनंद में विचर रहे थे। जंगलों जीव-जन्तु के झुण्ड, पशु-पक्षी जीव-जन्तु स्वछन्द रुप से विचरण करते हैं। अर्थात उन दिनों पर्यावरण अत्यन्त समृद्व था। रामायण कालीन ग्रंथों में प्रकति को सजीव व निर्जीव दोनो ही तत्वों से चेतना सम्पन्न बताया गया है। रामचरितमानस के उत्तरकांड में वर्णन मिलता है कि चारागाह, तालाब, हरित-भूमि, वन उपवन के सभी जीव आनंद पूर्वक रहते थे।

इसी तरह महाभारतकालीन मनीषियों ने भी पर्यावरण की गौरव महिमा मडित किया है। इस काल में भगवान कृष्ण ने गीता में प्रकृति को सृष्टि का उपादान कारण बताया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं प्रकति के कण-कण में सृष्टि का रचयिता समाया हुआ है। प्रकति के समस्त

चमत्कारों को परमेश्वर का स्वरुप बताते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं में ही पृथ्वी में प्रवेश करके सभी भूत-प्राणियों का धारण करता हूँ। महाभारत काल मे प्रत्येक तत्व को देवता सदृष्य स्वीकार कर उसकी प्रर्थना की जाती थी। उस समय वृक्षों की पूजा की जाती थी। वृक्षों को काटना महापाप समझा जाता था। वैदिक वांग्मय में दर्शन भी पर्यावरण की चेतना से भरा पडा है। सांख्य दर्शन में प्रकति और पुरुष के समन्वय को सृष्टि का कारण माना है। प्रकति जड़ एवं सथूल होते हुए भी अति सूक्ष्म है। अतः प्रकति समस्त सृष्टि की उत्पति का प्रमुख कारण है। न्याय दर्शन ईश्वर एवं जीव के साथ प्रकति का महत्वपूर्ण घटक है।

वास्तव में प्राचीन भारतीय वैदिक परम्परा में पर्यावरण संरक्षण समाया हुआ है। जो हमें जीवन की उस खुशहाली की ओर ले जाता है तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" की भावना को उद्बोधित करता है, वर्तमान समय में भी भारतीय वैदिक मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने की है, ताकि हमारा समाज और हमारा पर्यावरण भावी पीढ़ी के लिए बना रहे। पृथ्वी पर जीवन बनाये रखने हेतु हमें अपने भारतीय चिन्तन के स्वरुप प्रकति से भावनात्मक, एकात्मक स्थापित करने वाले परम्परागत श्रद्धामय संस्कार एवं व्यवहार में लाने होंगे। तभी सम्पूर्ण पृथ्वी धरातल पर पर्यावरण का संरक्षण हो पायेगा। हमारा वर्तमान हमारे भविष्य की पीढ़ी के समुख ऐसे वातावरण को प्रस्तुत कर रहा है, जो आने वाले समय के लिए भयावह दृश्य दिखा रहा है। हमें पुनः अपनी वैदिक परंपरा जो कि पर्यावरण संरक्षण के लिए जानी जाती थी। उसी ओर लौटना होगा, तभी हमारा पर्यावरण संरक्षित रह पायेगा।

निष्कर्षः-

वेद पुराणों के विषय सामग्री के विष्लेषण से सत्यापित होता है कि पर्यावरण चिन्तन, प्रदूषण निवारण में प्राचीन कालीन वेद प्रेरणा के स्रोत रहे हैं, जिसमें प्रत्येक प्राणी के लिए सुखदायक जीवन प्राप्त हो सके, ऐसे पर्यावरण का निर्माण करना सम्पूर्ण मानव जाति का कर्तव्य है। हमें प्राकृतिक आपदाओं एवं संकट से मुक्त हों इसके लिए भूमि, जल, वायु, मिट्टी, पेड, वनस्पति आदि को संरक्षित करना होगा। तभी हमारा पर्यावरण संरक्षित रह पायेगा।

सुझावः-

पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना के लिए केन्द्र, राज्य सरकारें एवं विभिन्न स्वयं सेवी संस्थायें, सामाजिक कार्यकर्ता, पर्यावरणविद्व के विचारों या विभिन्न धर्मों के विचार आदि पर शोध किऐ जा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] अग्रवाल, आर. के. (2023). *पर्यावरण विज्ञान और पारिस्थितिकी तंत्र*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.

[2] अग्रवाल, सी. एम. (2022). *भारत में जल संरक्षण: तकनीकी और पारंपरिक उपाय*. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.

[3] आर्य, के. सी. (2024). *वन्यजीव संरक्षण और जैव विविधता*. वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन.

[4] चतुर्वेदी, एस. पी., & शर्मा, आर. (2022). भारत में वन संरक्षण: चुनौतियाँ और समाधान. *पर्यावरण अनुसंधान पत्रिका*, 15(3), 45-62.

[5] दुबे, आर. सी. (2023). भारत में नदी प्रदूषण और जल संरक्षण. *राष्ट्रीय जल विज्ञान पत्रिका*, 32(1), 78-95.

[6] गुप्ता, एम. (2024). जलवायु परिवर्तन और कृषि पर इसका प्रभाव. *भारतीय कृषि अनुसंधान*, 28(2), 112-128.

[7] गुप्ता, वी. पी. (2023). *पर्यावरण रसायन और प्रदूषण नियंत्रण*. आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन.

[8] जैन, ए. के., मिश्रा, पी., & वर्मा, एस. (2023). शहरी क्षेत्रों में वायु प्रदूषण नियंत्रण के उपाय. *पर्यावरण प्रबंधन*, 45(4), 203-218.

[9] जोशी, एम. के. (2022). *हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र और संरक्षण*. देहरादून: नेशनल बुक ट्रस्ट.

[10] द्विवेदी, पी. के. (2024). *कृषि और पर्यावरण: एक समग्र दृष्टिकोण*. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.

[11] भारत सरकार। (2023). *राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2023*. पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय।

[12] मिश्रा, के. पी. (2022). ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण जागरूकता. *ग्रामीण विकास पत्रिका*, 25(3), 89-104.

[13] मुखर्जी, एस. (2023). *समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और संरक्षण*. कोलकाता: बुक्स एंड एलाइड प्रकाशन.

[14] पंडित, एन. के. (2024). वन्यजीव संरक्षण: भारतीय संदर्भ में. *वन्यजीव संरक्षण*, 18(2), 156-172.

[15] पटेल, आर. एन. (2023). *भारत में पर्यावरण कानून और न्यायशास्त्र*. अहमदाबाद: गुजरात यूनिवर्सिटी प्रेस.

[16] राय, एस., & सिंह, आर. के. (2023). भारत में अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएं. *पर्यावरण तकनीकी*, 41(6), 234-250.

[17] शर्मा, ए. के. (2022). *भारत में वायु प्रदूषण: कारण और निवारण*. जयपुर: रावत प्रकाशन.

[18] शर्मा, वी. के. (2024). *पर्यावरण कानून और नीति*. लखनऊ: यूनिवर्सल लॉ पब्लिशिंग।

[19] सिंह, ए. (2023). जैविक खेती और पर्यावरण संरक्षण. *जैविक कृषि पत्रिका*, 19(4), 67-82.

[20] सिंह, पी. के., & कुमार, एस. (2022). हिमालयी क्षेत्र में पर्यावरणीय चुनौतियाँ. *पर्वतीय पारिस्थितिकी*, 34(2), 123-140.

[21] सिंह, आर. पी. (2023). *जलवायु परिवर्तन: कारण, प्रभाव और समाधान*. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन.

[22] सिंह, वी. के. (2024). *भारत में मृदा संरक्षण और प्रबंधन*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

[23] तिवारी, एम. पी. (2023). भारत में सौर ऊर्जा का विकास. *नवीकरणीय ऊर्जा*, 27(1), 45-60.

[24] तिवारी, एस. के. (2023). *भारत में नवीकरणीय ऊर्जा: संभावनाएं और चुनौतियाँ*. भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी.

[25] त्रिपाठी, डी. (2022). *सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण*. नई दिल्ली: हिंद बुक सेंटर.

[26] उपाध्याय, बी. एन. (2022). *पर्यावरण भूगोल: सिद्धांत और व्यावहारिक पहलू*. आगरा: श्रीकुमार एंड कंपनी.

[27] वर्मा, आर. (2024). प्लास्टिक प्रदूषण और इसके पर्यावरणीय प्रभाव. *प्रदूषण नियंत्रण*, 38(3), 178-194.

[28] वर्मा, एस. सी. (2023). *भारत में जैव विविधता संरक्षण*. चंडीगढ़: पंजाब यूनिवर्सिटी प्रेस.

Cite this Article:

डॉ0 आर0सी0 भट्ट, "वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण", *Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue4, pp. 39-43, Feb-Mar 2025.*

Journal URL: https://nijms.com/

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.